

## तृतीयः पाठः

# सुभाषितानि

सुष्ठु भाषितं कथनं वा सुभाषितं कथ्यते। संस्कृतसाहित्ये सुभाषितेषु नीतिः, आदर्शः, सदाचारः एवञ्च जीवनस्य कृते मूल्यपरकं ज्ञानं विद्यते। वस्तुतः जीवने आवश्यकतत्त्वानां सरलतया सुभाषितमाध्यमेन शिक्षणं संस्कृतस्य वैशिष्ट्यं विद्यते। सुभाषितमाध्यमेन जनः जीवने परिवर्तनम् आनेतुं शक्नोति। अतः सुभाषितेभ्यः शिक्षा ग्रहणीया।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः  
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।  
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या  
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्रदोषः ॥1 ॥

**अन्वयः** - लक्ष्मीः उद्योगिनम् पुरुषसिंहम् उपैति। कापुरुषाः दैवेन देयम् इति वदन्ति। दैवं निहत्य आत्मशक्त्या पौरुषं कुरु। यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति अत्र को दोषः ?

**शब्दार्थः** - उद्योगिनम् - प्रयत्न करने वाले को, उपैति - पास जाती है, कापुरुषाः - कायर पुरुष, दैवम् - भाग्य को

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः।  
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥2 ॥

**अन्वयः** - विद्याहीनाः रूपयौवनसम्पन्नाः विशालकुल-सम्भवाः निर्गन्धाः किंशुकाः इव न शोभन्ते।

**शब्दार्थः** - निर्गन्धाः - बिना गन्ध वाले, किंशुकाः - टेसू / ढाक के फूल

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति  
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।  
आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः  
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥3 ॥

**अन्वयः** - गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति। ते (गुणाः) निर्गुणम् प्राप्य दोषाः भवन्ति। नद्यः आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति। समुद्रम् आसाद्य अपेयाः भवन्ति।

**शब्दार्थः** - निर्गुणम् - निर्गुणी के पास, नद्यः - नदियाँ, आस्वाद्यतोयाः - पीने योग्य/स्वाद्विष्ट जल वाली, प्रवहन्ति - बहती हैं, आसाद्य - पहुँचकर / पाकर, अपेयाः - न पीने योग्य

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम्।  
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति ॥4 ॥

**अन्वयः** - प्रथमे (वयसि) विद्या न अर्जिता, द्वितीये धनं न अर्जितम् तृतीये पुण्यम् न अर्जितम् (तर्हि) चतुर्थे किं करिष्यति ?

**शब्दार्थः** - प्रथमे - बाल्यावस्था में, द्वितीये - यौवनावस्था में, अर्जितम् - इकट्ठा किया / कमाया, तृतीये - अधेड़ अवस्था में अर्थात् 50 से 75 तक की आयु।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते  
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।  
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं  
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥5॥

**अन्वयः** - माता इव रक्षति पिता इव हिते नियुङ्क्ते कान्ता इव च खेदम् अपनीय अभिरमयति, लक्ष्मीं तनोति, दिक्षु कीर्तिं वितनोति (एवम्) विद्या कल्पलता इव किं किं न साधयति।

**शब्दार्थः** - इव - के समान, नियुङ्क्ते - लगाती है, खेदम् - कष्ट/दुःख को, कान्ता - पत्नी, अपनीय - दूर करके, अभिरमयति - आनंदित करती है, तनोति - फैलाती है, दिक्षु - दिशाओं में, कल्पलतेव - कल्पवृक्ष की भाँति।

बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणा च देहस्य सारं व्रतधारणं च।  
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं, वाचः फलं प्रीतिकरं नराणाम् ॥6॥

**अन्वयः** - नराणाम् बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणा, देहस्य च सारं व्रतधारणं, अर्थस्य सारं किल पात्रदानं, वाचः फलम् प्रीतिकरम्।

**शब्दार्थः** - तत्त्वविचारणा - नित्य वस्तुओं का शोध करना, देहस्य - शरीर का, पात्रदानम् - सुपात्र को दान देना, वाचः - वाणी का।

न चौरहार्यं न च राजहार्यम्  
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।  
व्यये कृते वर्धते एव नित्यम्  
विद्याधनं सर्वधन प्रधानम् ॥7॥

**अन्वयः** - चौरहार्यं न राजहार्यं च न, भ्रातृभाज्यं न, भारकारि च न। व्यये कृते नित्यं वर्धते एव। विद्याधनं सर्वधन-प्रधानम्।

**शब्दार्थः** - चौरहार्यम् - चोर के द्वारा चुराई जाने वाली, भारकारि - बोझ करने वाली।

अङ्गेन गात्रं नयनेन वक्त्रम्  
न्यायेन राज्यं लवणेन भोज्यम्।  
धर्मेण हीनं खलु जीवितञ्च  
न राजते चन्द्रमसा विना निशा ॥8॥

**अन्वयः** - अङ्गेन (विना) गात्रं, नयनेन (विना) वक्त्रं, न्यायेन (विना) राज्यं, लवणेन (विना) भोज्यं खलु धर्मेण हीनं जीवितं, चन्द्रमसा विना निशा न राजते।

**शब्दार्थः** - गात्रम् - शरीर, वक्त्रम् - मुख, लवणेन विना - नमक के बिना, भोज्यम् - भोज्य पदार्थ, जीवितम् - जीवन, निशा - रात्रि

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।  
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥9 ॥

**अन्वयः** - परिवर्तिनि संसारे को मृतः न वा जायते । येन जातेन वंशः समुन्नतिं याति सः जातः ।

**शब्दार्थः** - जातः - उत्पन्न हुआ, परिवर्तिनि - परिवर्तनशील

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः  
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।  
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्  
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥10 ॥

**अन्वयः** - मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः उपकारश्रेणिभिः त्रिभुवनं प्रीणयन्तः परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य निजहृदि नित्यं विकसन्तः सन्तः कियन्तः सन्ति ?

**शब्दार्थः** - मनसि - मन में, वचसि - वाणी में, काये - शरीर में, त्रिभुवनम् - तीनों लोकों को, प्रीणयन्तः - प्रसन्न करते हुए, पर्वतीकृत्य - पर्वत के समान बनाकर, निजहृदि - अपने हृदय में, विकसन्तः - बढ़ाते हुए, कियन्तः - कितने, पीयूषपूर्णाः - अमृत से भरे हुए ।

### अभ्यासः

#### ( 1 ) एकपदेन उत्तरं लिखत -

- (क) गुणाः कं प्राप्य दोषाः भवन्ति ?
- (ख) प्रथमे का अर्जनीया ?
- (ग) विद्या कां तनोति ?
- (घ) किं धनं भ्रातृभाज्यं नास्ति ?
- (ङ) दैवेन देयमिति के वदन्ति ?

#### ( 2 ) एकवाक्येन उत्तरं लिखत -

- (क) समुद्रमासाद्य नदीनां तोयाः कीदृशाः भवन्ति ?
- (ख) माता इव का रक्षति ?
- (ग) देहस्य सारं किम् ?
- (घ) सन्तः केन पूर्णाः भवन्ति ?

#### ( 3 ) अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत -

- (क) निर्गन्धाः किंशकुः इव के न शोभन्ते ?
- (ख) गुणानां स्वभावः कीदृशः भवति ?
- (ग) विद्या किं किं साधयति ?
- (घ) विद्याधनस्य किं वैशिष्ट्यम् ?

( 4 ) शुद्धवाक्यानां समक्षम् “आम्” अशुद्धवाक्यानां समक्षं “न” इति लिखत-

- |     |  |                      |
|-----|--|----------------------|
| (क) | नद्यः आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति ।          | <input type="text"/> |
| (ख) | यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः । | <input type="text"/> |
| (ग) | विद्या मातेव रक्षति ।                    | <input type="text"/> |
| (घ) | गात्रम् अङ्गेन विना शोभते ।              | <input type="text"/> |
| (ङ) | उद्योगिनं पुरुषं लक्ष्मीः उपैति ।        | <input type="text"/> |

( 5 ) युग्ममेलनं कुरुत -

- | ( अ )        | ( आ )           |
|--------------|-----------------|
| (क) किंशुकाः | कल्पलतेव        |
| (ख) नद्यः    | निर्गन्धाः      |
| (ग) तृतीये   | आस्वाद्यतोयाः   |
| (घ) विद्या   | न्यायेन         |
| (ङ) राज्यम्  | नार्जित पुण्यम् |

( 6 ) श्लोकपूर्तिं कुरुत -

- (क) ----- मृतः ----- जायते ॥  
स जातो ----- याति वंशः ----- ।
- (ख) बुद्धेः ----- देहस्य ----- च ।  
अर्थस्य ----- वाचः ----- नराणाम् ॥

( 7 ) सन्धिं कृत्वा सन्धेः नाम लिखत -

- |     |                |       |   |       |   |       |  |
|-----|----------------|-------|---|-------|---|-------|--|
| (क) | मातेव -        | ----- | + | ----- | = | ----- |  |
| (ख) | पितेव -        | ----- | + | ----- | = | ----- |  |
| (ग) | कोऽत्र -       | ----- | + | ----- | = | ----- |  |
| (घ) | नार्जिता -     | ----- | + | ----- | = | ----- |  |
| (ङ) | जीवितञ्च -     | ----- | + | ----- | = | ----- |  |
| (च) | भवन्त्यपेयाः - | ----- | + | ----- | = | ----- |  |

( 8 ) अव्ययैः वाक्यरचनां कुरुत -

- (क) कृते  
(ख) यदि

- (ग) खलु  
 (घ) इव  
 (ङ) विना  
 (च) एव

( 9 ) अधोलिखितपदानां मूलशब्दं विभक्तिं वचनञ्च लिखत -

	पदम्	मूलशब्दः	विभक्तिः	वचनम्
(क)	चन्द्रमसा	-----	-----	-----
(ख)	हृदि	-----	-----	-----
(ग)	बुद्धेः	-----	-----	-----
(घ)	दिक्षु	-----	-----	-----
(ङ)	अङ्गेन	-----	-----	-----

( 10 ) अधोलिखितक्रियापदानां धातुं लकारं पुरुषं वचनञ्च लिखत -

	क्रियापदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
(क)	शोभन्ते	-----	-----	-----	-----
(ख)	जायते	-----	-----	-----	-----
(ग)	तनोति	-----	-----	-----	-----
(घ)	सन्ति	-----	-----	-----	-----
(ङ)	भवन्ति	-----	-----	-----	-----

**योग्यताविस्तारः -**

- सुभाषितश्लोकानां लयबद्धगानं कुरुत ।
- अन्यान्यपि सुभाषितश्लोकान् अन्विष्य लिखत ।
- विद्यामधिकृत्य पञ्चवाक्यानि लिखत ।

